

① ओड़ी निम्नलिखित ।

1 देव	A. पाँच महापुत्र या आर्य देवपुत्रों के पालक
2 गुरु	B. तप-शास्त्रादि में प्रशिक्षण
3 यति	C. कठिण परमात्मा
4 शीलवान	D. विद्यार्थ-व्यवहार मोक्षमार्ग में प्रवृत्त
5 विमनुराज	E. शुद्धात्म स्वरूप में पराधीन
6 भेदाभेद रत्नत्रय धारक	F. अन्य भेद व्यक्तियों को दीक्षा के प्रदान

② 'देव' या 'गुरु' आदि ।

- 1- 'शास्त्रोपदेश' महाकविधर्म के 'शुभपरिणाम कथिका' नामक अष्टांश उपनिषद् की यह पहली गाथा है।
- 2- इस गाथा में शुभ परिणाम का फल बताया गया है।
- 3- देव - गुरु - यति के प्रति विमनुराज - लही धर्म है या धर्म का रक्षा है।
- 4- शुभोपदेश के अर्थ में देव और विमनुराज को लेकर विमनुराज की व्याख्या करना।
- 5- भूतकाल में मैं ही शास्त्र लीखकर भगवान की पूजा की है।
- 6- 'शास्त्रोपदेश मोक्ष' के अर्थ में शास्त्रों का शास्त्र और उपदेशादि क्रिया के मोक्ष की प्राप्ति होती है।

- [illegible]

⑨ ‘नेच’ या ‘पूठ’ बनाईये।

- 1- शुभोपयोग धर्म है।
- 2- शुभोपयोग धर्म का कारण है।
- 3- शुभोपयोग धर्म का कारण अर्थ का कारण है।
- 4- शुभ और अशुभ में अन्तर: लक्षण है।
- 5- ६ महिना और ८ लक्षणों ६०८ लीनों को देशान्तरों परिलक्षित होती है।
- 6- निधनशक्ति शुभभाव का फल है।
- 7- शुभभाव के फल में प्राप्ति होती सामग्री को आगने का भाव अशुभ भाव है, पापधर्म का कारण है।
- 8- हम शुभभाव करने लगे कम से कम धर्म की सामग्री को हमें मिलेगी; इसलिए शुभभाव करना ही चाहिये।

⑨ 'देव' या 'जुठ' काईके।

- 1- मृगुप्रपात = इति दुःखों के दूरने के लिये सपक्षात करने प्रथम के शिखर के गिरना।
- 2- ३१ आश्विन की आयु वाले देव के कंठ से हर ३१,००० वर्ष पर अमृत झरता है।
- 3- देव मंगल विषयों में श्रम कर रहे हैं - यह उनके स्वाभाविक मुख्य की निशानी है।
- 4- सवर्धिविधि के सम्यग्दृष्टि देवों के मनुष्य गति जाने की उत्प्रेक्षा होती है।
- 5- इन्द्रियमुख का हार्दिक देव और मनुष्य - यह दो गति हैं।

9) 'नेच' या 'लूठ' बताइए।

- 1- अशुभोपयोग के दो भेद - शुभोपयोग और अशुभोपयोग निश्चयक हैं।
- 2- भक्ति पूजादि आद्य परमार्थिके मन्त्रिन हैं।
- 3- आर्द्रशक्तीम खाने की इच्छा होना वह पापभाव है।
- 4- गृह्णपूर्वक आर्द्रशक्तीम खानेकी क्रिया पापरूप है।
- 5- गृह्णपूर्वक आर्द्रशक्तीम खाने से पापबन्ध होता है।
- 6- आर्द्रशक्तीम मिलना वह पापका फल है।
- 7- विषयभोगमें राग है, रागमें आकुलता है, आकुलता में दुःख है।
- 8- परमार्थिक अनेकविध आपदावाला चक्रवर्ती ^{सुखा} और अनेकविध आपदावाला नारकी दुःख है।
- 9- अनेकविध आपदावाला चक्रवर्ती और अनेकविध आपदावाला नारकी आकुलता के कारण भग्नरूप से दुःख है।
- 10- शुभ और अशुभ उपयोग का समानपन - यह गाथा का तात्पर्य है।
- 11- प्रथम विषयवाचिका छूटती है, उसके पश्चात् ही गाथा का तात्पर्य प्रष्ट हो जाता है।

९) रैच' या 'पूक' काईके'।

- 1- इन गाथा में पुष्प के उत्पत्ति का स्वीकार किया गया है।
- 2- गाँदा खून पीने लगे पौक (जो) लुप्ता है।
- 3- पक्षी देखते पक्ष को धारण करने वाले इन्सेक्टों को चकवती देखते चक को धारण करने वाले चकवती।
- 4- शक्रेरु इर लाल दिमाग का रंगी है।
- 5- इन्सेक्ट हर दो पक्ष में (१५ दिन में) दो बार खाने लगे है।
- 6- चकवती की लगे १६,००० देव करने है।

गाथा - ७४ : प्रश्नोत्तर

(1) (9) ओड़ी लिखाई के ।

1 गाथा ७३	A. लृष्टा का घर
2 गाथा ७४	B. पंचेन्द्रिक के विषय पुनि स्तुकाय
3 लृष्टायतन	C. पुण्य कुरुव के बीज का हेतु है ।
4 विषयलृष्टा	D. पुण्य की सत्ता जगत में है ।

(2) रेच या 'लूक' बताइये ।

- 1- पुण्य का फल लृष्टा का घर है ।
- 2- पुण्य के फल में मिलती रात्रगी और उसके उत्पन्न होती लृष्टा के बीच कला - कर्म संबंध है ।
- 3- पुण्य के फल में मिलती रात्रगी में लृष्टा करने के विषय में प्रवृत्ति होती है ।
- 4- पुण्य के फल में मिलती रात्रगी पर के दृष्टि हटा लेने से लृष्टा उत्पन्न होती नहीं ।
- 5- रेच तरफ विकल्प करने के मुख्य होता है ।
- 6- वृश्च उपयोग का उत्संघन करने पर हात्मा की प्राप्ति होती है ।

१) 'लेच' या 'अहं' काटें।

- 1- अमेरिका में विचार करने वाले हम सबको तथा मुख्य-सामग्री का प्राप्ति है, इसलिए हमें कोई लूटना नहीं है।
- 2- हम सबको तथा भी लूटना है, क्योंकि हमें तथा मुख्य-सामग्री की प्राप्ति नहीं हुआ है।
- 3- पुण्य के उदयने प्राप्त होती सामग्री के आगने के समय तो मुख्य है, लेकिन आगने के बाद में मुख्य है।
- 4- लूटना पाषाण की होती है, पुण्यदान को नहीं।
- 5- जिन्हें ज्ञान के साधन से संतोष नहीं है, उन्हें व्यवसाय या व्यवसाय में लूटना होती ही है।
- 6- मैं लूट मुख्य का सागर हूँ - इसका विचारन जब तक नहीं आता, तब तक लूटपाती इच्छा होती रहती है।
- 7- २८ मूलगुण और ५ महापुण्य का निश्चिन्ता पालन करने वाले दुष्टमित्रों काटें लूटना नहीं होती।
- 8- केवली भगवान को भव्य जादों को उपदेश देने की लूटना होती है।
- 9- अपने प्राणों का डाल नहीं डाले तब तक विकारी रघुन पूजनेवाली जादों की लूटना और मेरी लूटना में कुछ भी लफावा नहीं है।
- 10- लूटपाती दुष्टांकुर, दुष्टांकुर के दुःखदृष्टि, इसके कारण विषयों में मुख्यका और इसलिए मुख्यपक्ष विषय के अंगों में प्रवृत्ति - यह धरनाचक्र अज्ञानी लूट पाँचोंद्वय जादों को सदा चलाता रहता है। (समा)
- 11- 'देवपर्यंत' शब्द में आकाशमय के मुख्य तथा निर्धन और कमजोर के मुख्य सहित सब लूटपाती जादों का समावेश हो जाता है।

① ओड़ी लिमाइके ।

1 परथुन	A. विधन वाला है, अन्धत आकुलता सहित है।
2 आधा सहित	B. प्राप्त
3 र्वांडित	C. जिसमें टच का आश्रय नहीं है, इसलिये पराधीन है।
4 अंधकारण	D. हाजि-वृद्धि सहित है, अन्धत अस्थिर है।
5 विषम	E. विपक्ष की उत्पत्ति सहित है, विच्छिन्न है।
6 लब्ध	F. राग-द्वेष जनक है।

② 'सच' या 'जुठ' बताइये ।

- 1 - इस गाथा में इन्द्रियमुख्य वास्तव में दुख है ऐसा समझाया है।
- 2 - पैसा हो तो दुख मिले - यह मान्यता इन्द्रियमुख्य की पराधीनता बताती है।
- 3 - (SORRY TO REMIND YOU!) अमरीका के STOCK MARKET में सबने INVEST की हुई मूडी कम हो गई - यह इन्द्रियमुख्य की विषमता का उदाहरण है।
- 4 - हम कल रात को धर में बहुत अच्छी मुवी देख रहे थे, वहां अचानक पावर कट OFF हो जाने के हमारे रंग में अंग पड़ गया - यह बताता है कि इन्द्रियमुख्य अपाह्नित और र्वांडित है।
- 5 - FOOTBALL की GAME देखते समय जब मेरी टीम जीतती है तब मुझे हमारे खिलाड़ी अहोत अच्छे लगते हैं और जब हमारी टीम हार जाती है तब मुझे अहोत गुस्सा होता है। यह बताता है कि इन्द्रियमुख्य अंधका कारण है।

ઉપસાધા: દેવે પુણ્ય અને પાપનું અભિરૂપણ નિરૂપણ કર્યું છે (આ ભક્તનો)

ભક્તોને તે છે:-

ગણિ માનવે- અને રાત્રિ પુણ્યે પાપનાં ન બિરૂપિત છે,
તે નિરૂપણ આરંભેણે યોગે અપાર નિરૂપણે મળે. ૭૭.

અનુવાદ: - અને રાત્રિ પુણ્ય અને પાપનાં નિરૂપણ એ એક જ નીતિ માનવે, તે નિરૂપણે-
દેવે બીજા યામે યોગે અપાર નિરૂપણે પડેલાં છે.

ભાષા: જેનું રૂપાંતરણ કરી અને નિરૂપણ કરી બીજા અભિરૂપણને બાંધવાનું જ છે તે
છે, તેમ પુણ્ય અને પાપ બીજા અભિરૂપણને બાંધેલ જ છે. જે અપાર પુણ્ય અને પાપ
અભિરૂપણે ફરી માનવે નથી, તેને આ નિરૂપણે નિરૂપણે રૂપાંતરણે ફરી અનુવાદ
ગણે.

સારાંશ: પુણ્ય અને પાપ બીજા અભિરૂપણે રૂપાંતરણે છે.

• આરંભેણે: યોગે અપાર અને અપાર પાપનાં નિરૂપણે, અનુવાદે છે;
અનુવાદે નિરૂપણે અપાર પુણ્ય અને અપાર પાપ નથી તેમજ રૂપાંતરણે અપાર-
રૂપનાં નિરૂપણે, અનુવાદે છે; પરંતુ રૂપાંતરણે અપાર અપાર નિરૂપણે
નિરૂપણે નિરૂપણે નિરૂપણે, અનુવાદે નથી.

• રૂપાંતરણે અપાર પાપનાં અનુવાદે અપાર પુણ્યનાં નિરૂપણે રૂપાંતરણે પર
નિરૂપણે: આરંભે 'પાપાંતરણે' રૂપાંતરણે છે.

• તે અપાર યોગે નિરૂપણે પડેલાં છે તે અપાર એક છે તે અપાર નિરૂપણે નિરૂપણે
આ નિરૂપણે નિરૂપણે નિરૂપણે, અપાર નિરૂપણે રૂપાંતરણે. આ નિરૂપણે નિરૂપણે પડેલાં
અનુવાદનાં પાપ નિરૂપણે એક છે.

• એક દેવેનાં વાત એક છે જે પુણ્યનાં પાપનાં રૂપાંતરણે એક બીજા છે, તે અપાર
રૂપાંતરણે અપાર અપાર પુણ્યનાં પાપનાં પડેલાં; પરંતુ જે પુણ્યનાં અનુવાદે પડેલાં
પાપનાં એક છે, અને અપાર પાપનાં રૂપાંતરણે અપાર પુણ્યનાં વાત છે; પરંતુ
રૂપાંતરણે અનુવાદે પડેલાં પાપનાં એક છે. રૂપાંતરણે રૂપાંતરણે રૂપાંતરણે
જ નથી, તેને પાપનાં એક છે, પાપનાં નથી.

આ રૂપાંતરણે પાપનાં પાપ નિરૂપણે પડેલાં પાપનાં એક છે; અને આ વાત
અપાર પાપનાં રૂપાંતરણે અપાર પાપનાં એક છે. અપાર એક છે તે અપાર પાપનાં પાપનાં
રૂપાંતરણે પુણ્યનાં પાપનાં રૂપાંતરણે એક બીજા છે અને આ વાતનાં
રૂપાંતરણે એક રૂપાંતરણે અનુવાદે નિરૂપણે પડેલાં પાપનાં એક છે.

• પુણ્ય-પાપનાં અપાર એક જ નિરૂપણે છે, પરંતુ તેને રૂપાંતરણે અપાર છે. આ
નિરૂપણે અપાર છે, અને તેને રૂપાંતરણે અપાર છે.

• પુણ્યનું રૂપાંતરણે અપાર પાપનાં એક છે.

• આ વાત એક છે અને આ રૂપાંતરણે એક છે- અને રૂપાંતરણે એક છે. રૂપાંતરણે એક
રૂપાંતરણે અપાર-આ નિરૂપણે એક નિરૂપણે એક છે. આ રૂપાંતરણે પુણ્યનાં
એક-અને અપાર નિરૂપણે છે.

• જે અપાર-પાપનાં રૂપાંતરણે એક જ નિરૂપણે છે, તે એક પુણ્ય અને પાપનાં અપાર
અપાર એક છે, અપાર પુણ્યનાં એક એક છે, પરંતુ અપાર એક એક છે.

१) 'मेघ' या 'पृष्ठ' अनाइके ।

- 1- सत्यशर की नास्यपुति टीका में पुण्यपाप द्वैधिकार के संलग्न आचार्य व्यक्तने लिखते हैं कि 'इस प्रकार पुण्यपाप द्वैधिकार समाप्त हुआ ।'
- 2- 'यह इतना हीर शर में परिभूषण करेगा - टीका के इस वाक्य के आशय यह है कि इस जीव का कदापि मोक्ष होना शक्य ही नहीं है ।'
- 3- मेरे इस अल के पुण्य के फलस्वरूप मुझे अगले अल में इन्हिन्द पद मिल सकता है ।
- 4- पुण्य का ध्येय अतीन्द्रिय मूल्य है ।
- 5- शुद्धिपयोग की प्राप्ति शुभोपयोग के काल में होती है, इसलिये शुभभाव इपादेय है और मुझे शुभभाव का पुनर्जाय करना चाहिये ।
- 6- पुण्य और पाप में संलग्न मानना कोई बड़ा दोष नहीं है, इसलिये इस मान्यता का फल संलग्न शर का परिभूषण नहीं होना चाहिये ।
- 7- 'अहंकारिक संलग्न' - टीका के इस शब्द में जीव के मान कषाय (अहंकार) के बारे में इशारा किया गया है ।
- 8- पुण्यपाप परिणाम का ग्राह्य अलम्बन शुद्धिपयोग का निरन्तर है ।

⑨ ‘नेच’ या ‘जूक’ अनाईदें।

- 1- शुभ परिणाम अधिकार शुभ परिणाम की महिमा दिखाने के लिये लिखा गया है।
- 2- शुभभाव, पुण्य और पुण्य-फल प्राथमिक भूमिका वालों के लिये उपादेय है।
- 3- शुभभाव, पुण्य और पुण्य-फल सार्थक होना ही है।
(लोह के सत्य को ग्रहण करें),
- 4- अग्नि जो लोह का रंग करे तो उसे धन के पहार पहन करने पड़ते हैं।
- 5- अग्नि जो लोह का रंग न करे तो उसे धन के पहार पहन करने पड़ते हैं।
(लोह के सत्य को ग्रहण न करें), जड़ी
- 6- स्वर्ण द्रव्य है और परद्रव्य अनिष्ट है।
- 7- दक्षिणोक्त (उत्तर) का स्वामी शक्रसेन है और दक्षिणोक्त (दक्षिण) का स्वामी सुदर्भ है।
- 8- इस गाथा में अनाईदें दूधे 'वेहात कुंरु' में दूसरे सभी कुंरु भी द्या जाते हैं।
- 9- अन्धदर्शन पाने के लिये हमें पंच परमेश्वर का शरण लेना चाहिये।
- 10- अन्धदर्शन पाने के लिये हमें शुद्धोपयोग का शरण लेना जरूरी है।
- 11- 'उपयोग विरुद्ध' मूल पाठ के इस शब्द में 'विरुद्ध' का अर्थ शुभ और अशुभ के रहित - झंझा होता है।

9) आंदोलन निर्माहक ।

1 उन्मुखन	A. विविध प्रकार का शुभचक्र
2 आंदोलन	B. उद्यम
3 धूल आभूषण	C. निरुद्धन, अर्थात् निकाल देना
4 आभूषण	D. निगोद
5 मोह की रोग	E. शुभोपयोग परिणति
6 महादुःख लंकट	F. मिलन

2) 'मोह' या 'मोह' का अर्थ ।

- 1- इस गांधी में मुख्य रूप से मुनिराज के चारित्र्यमोह के नाश की बात है।
- 2- अपने दायित्व समझित नहीं है। इन मुनिराज के चारित्र्यमोह के उपरांत मिथ्यात्व का भी सत्ता में जरा होता है। इनके मुनिराज के दोनों प्रकार के मोह का नाश करना जानी होता है।
- 3- अशुभभाव वाला अशान्ति जल निगोद के अतिदुःख लंकट के निकट है। और शुभभाव वाला अशान्ति निगोद के इतना निकट नहीं है।
- 4- यह गांधी तो मुनिराज के चारित्र्यमोह के नाश के लिये है। ^{इस लिये} हमारे काम की ^{जहाँ} है।
- 5- गारकी मरकर अकेन्द्रिय में ही जाता है।
- 6- देव मरकर अती पंचेन्द्रिय ही होता है।
- 7- दीक्षा लेने समय शुभोपयोग की प्रतिष्ठा ली जाती है।
- 8- शुभोपयोग के मुनिराज का उत्साहजनक अंश होता है।
- 9- मोह की रोग पर विजय पाने के लिये कठिने होना चाहिए। स्वभाव सम्मुख का प्रबल प्रसन्न करना।
- 10- मिथ्यात्व के निरुद्धन के लिये इस आपस के ^(शुद्ध है) कमर करना चाहिए। इस गांधी द्वारा परोक्ष रूप से आचार्यजी हम सबको अर्थ प्रेरणा दे रहे हैं।

① ओटी मिलानें ।

1. ग्रंथि	A. त्रिकाली ध्रुव
2. अन्यत्र रूप विशेषण	B. पद्यि
3. निष्कथ	C. गौक
4. क्षणवर्ती व्यतिरेक	D. गुण

② ओटी मिलानें ।

1. वासना	P. दृष्टिद करना
2. अलङ्कार	Q. अनर्था लीन
3. अलङ्कार करना	R. त्रैलोक्यिक दृष्टिकोण निरूपित करनेवाली प्रणयि
4. चिद्विषयिणी की गुंथि	S. अविप्राय

③ 'नय' या 'पुठ' बताइये ।

- 1- इस गाथा में मुख्यतः चारित्र्यमोह के नाश की बात की गयी है ।
- 2- अश्विनी जीव भी स्वभाव से लिये लगान शुरू है ।
- 3- अष्टपाद में कहा गया है कि 'परदृष्टि को गुंथें' ; इसलिये हमें अरहंत के दृष्ट-गुण-पद्यिका दिखाने नहीं करना चाहिये ।
- 4- यदि मैं मुझे अरहंत और लिये लाना ही मानूँ तो फिर मुझे मोक्षार्थी का पुरुषार्थ करना नहीं होगा ।
- 5- विद्यात्मक स्वरूप से अरहंत और दृष्टिस्वरूप से अरहंत अलग हैं ।
- 6- हमें प्रथम अरहंत के स्वरूप को जानने के लिये कहा है, क्योंकि वीतरागी होने से उनका स्वरूप स्वयं स्पष्ट है ।
- 7- आत्मा का अरहंत चैतन्यरूप विशेषण इसकी पद्यि है ।
- 8- हरि के इंदुहृत्ता में मोती गुण के अरहंत और लफेदी पद्यिके स्थान पर है ।
- 9- 'लोकता' या 'मुल्ल' हर परिणाम दृष्टि की रूपनारूप है ।
- 10- गुण अन्यत्र रूप है, पद्यि व्यतिरेकी है ।
- 11- अरहंत के दृष्ट-गुण-पद्यि दिखाने का अर्थ निरूपित करने से ही मोक्षार्थी प्राप्ति होता है । (It is the first step in right direction).
- 12- आत्मा के दृष्ट-गुण-पद्यि को जानकर लक्षण पद्यि लक्ष्य गुणों को अकेले चैतन्य दृष्टि में अलङ्कार करना अरहंत के नाश का इलाज है ।

④ 'नय' या 'पुठ' बताइये ।

- 1- सम्मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रथम पद्यिकों को और बाद में गुणों को दृष्टि में प्रवेश कराना चाहिये ।
- 2- हरि के दिव्यभूत त्रिकाली ध्रुव लक्षण को यदि यथावत् रूप से जानने से ही नहि, किन्तु हमें अकेले स्थापित करने से सम्मोक्ष की प्राप्ति होती है ।
- 3- पूरे स्वरूप का कथन दृष्टिभूत है, इसकी प्राप्ति आनन्द है । (सम्मोक्ष)
- 4- आत्मा के स्वरूप दिखाने निरूपित लक्षण तक मन का विकास है, जो कि नहीं होता ।
- 5- इस गाथा में लक्ष्य ज्ञान की ही बात की है, पुरुषार्थ की नहीं ।

ପ୍ରକାଶକ ଇ, ଫ ଓ ଆମିକାନ୍ସ ପବ୍ଲିଶିଂ ଓନ^(୨୨-୨) ଫର୍ ଯୁଏଲିନାନ୍ ଥିଓଲୋଜି^{୧୨୩୫}

[illegible]

જો સિંચાઈમાંથી પાણી પૂરું થાય છે તો જમીનમાંથી પાણી નીકળે છે, તો પાણી પૂરું થાય છે તો પાણી નીકળે છે. જમીન, પાણી, જમીનમાંથી પાણી નીકળે છે તો પાણી પૂરું થાય છે, જમીનમાંથી પાણી નીકળે છે.

[illegible]

• ମିଥୁନ ଚନ୍ଦ୍ର = ଗର୍ଭମୟ ମିଥୁନ ଚନ୍ଦ୍ର ଗର୍ଭ.

[illegible]

• $\vec{u} \cdot \vec{v} = |\vec{u}| |\vec{v}| \cos \theta$ where θ is the angle between $\vec{u}$ and $\vec{v}$. $\vec{u} \cdot \vec{v} = 0$ if and only if $\theta = 90^\circ$.

21. ଶିଖରୀ ପରିଭ୍ରମଣ କ୍ଷେତ୍ରର କେନ୍ଦ୍ର ଠାରୁ ଶିଖରୀର ଉଚ୍ଚତା h ଓ ଶିଖରୀର ପରିଧି P ଥିବାରୁ h ଓ P ମଧ୍ୟରେ ଥିବା ସମ୍ପର୍କ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଅଟେ :

[illegible]

Yn i'w gylchwrdd, mae'r gylchwrdd yn parhau'n ddwyddedd.

• 2018-19-2019-2020-2021-2022-2023-2024-2025-2026-2027-2028-2029-2030-2031-2032-2033-2034-2035-2036-2037-2038-2039-2040-2041-2042-2043-2044-2045-2046-2047-2048-2049-2050-2051-2052-2053-2054-2055-2056-2057-2058-2059-2060-2061-2062-2063-2064-2065-2066-2067-2068-2069-2070-2071-2072-2073-2074-2075-2076-2077-2078-2079-2080-2081-2082-2083-2084-2085-2086-2087-2088-2089-2090-2091-2092-2093-2094-2095-2096-2097-2098-2099-2100-2101-2102-2103-2104-2105-2106-2107-2108-2109-2110-2111-2112-2113-2114-2115-2116-2117-2118-2119-2120-2121-2122-2123-2124-2125-2126-2127-2128-2129-2130-2131-2132-2133-2134-2135-2136-2137-2138-2139-2140-2141-2142-2143-2144-2145-2146-2147-2148-2149-2150-2151-2152-2153-2154-2155-2156-2157-2158-2159-2160-2161-2162-2163-2164-2165-2166-2167-2168-2169-2170-2171-2172-2173-2174-2175-2176-2177-2178-2179-2180-2181-2182-2183-2184-2185-2186-2187-2188-2189-2190-2191-2192-2193-2194-2195-2196-2197-2198-2199-2200-2201-2202-2203-2204-2205-2206-2207-2208-2209-2210-2211-2212-2213-2214-2215-2216-2217-2218-2219-2220-2221-2222-2223-2224-2225-2226-2227-2228-2229-2230-2231-2232-2233-2234-2235-2236-2237-2238-2239-2240-2241-2242-2243-2244-2245-2246-2247-2248-2249-2250-2251-2252-2253-2254-2255-2256-2257-2258-2259-2260-2261-2262-2263-2264-2265-2266-2267-2268-2269-2270-2271-2272-2273-2274-2275-2276-2277-2278-2279-2280-2281-2282-2283-2284-2285-2286-2287-2288-2289-2290-2291-2292-2293-2294-2295-2296-2297-2298-2299-2300-2301-2302-2303-2304-2305-2306-2307-2308-2309-2310-2311-2312-2313-2314-2315-2316-2317-2318-2319-2320-2321-2322-2323-2324-2325-2326-2327-2328-2329-2330-2331-2332-2333-2334-2335-2336-2337-2338-2339-2340-2341-2342-2343-2344-2345-2346-2347-2348-2349-2350-2351-2352-2353-2354-2355-2356-2357-2358-2359-2360-2361-2362-2363-2364-2365-2366-2367-2368-2369-2370-2371-2372-2373-2374-2375-2376-2377-2378-2379-2380-2381-2382-2383-2384-2385-2386-2387-2388-2389-2390-2391-2392-2393-2394-2395-2396-2397-2398-2399-2400-2401-2402-2403-2404-2405-2406-2407-2408-2409-2410-2411-2412-2413-2414-2415-2416-2417-2418-2419-2420-2421-2422-2423-2424-2425-2426-2427-2428-2429-2430-2431-2432-2433-2434-2435-2436-2437-2438-2439-2440-2441-2442-2443-2444-2445-2446-2447-2448-2449-2450-2451-2452-2453-2454-2455-2456-2457-2458-2459-2460-2461-2462-2463-2464-2465-2466-2467-2468-2469-2470-2471-2472-2473-2474-2475-2476-2477-2478-2479-2480-2481-2482-2483-2484-2485-2486-2487-2488-2489-2490-2491-2492-2493-2494-2495-2496-2497-2498-2499-2500-2501-2502-2503-2504-2505-2506-2507-2508-2509-2510-2511-2512-2513-2514-2515-2516-2517-2518-2519-2520-2521-2522-2523-2524-2525-2526-2527-2528-2529-2530-2531-2532-2533-2534-2535-2536-2537-2538-2539-2540-2541-2542-2543-2544-2545-2546-2547-2548-2549-2550-2551-2552-2553-2554-2555-2556-2557-2558-2559-2560-2561-2562-2563-2564-2565-2566-2567-2568-2569-2570-2571-2572-2573-2574-2575-2576-2577-2578-2579-2580-2581-2582-2583-2584-2585-2586-2587-2588-2589-2590-2591-2592-2593-2594-2595-2596-2597-2598-2599-2600-2601-2602-2603-2604-2605-2606-2607-2608-2609-2610-2611-2612-2613-2614-2615-2616-2617-2618-2619-2620-2621-2622-2623-2624-2625-2626-2627-2628-2629-2630-2631-2632-2633-2634-2635-2636-2637-2638-2639-2640-2641-2642-2643-2644-2645-2646-2647-2648-2649-2650-2651-2652-2653-2654-2655-2656-2657-2658-2659-2660-2661-2662-2663-2664-2665-2666-2667-2668-2669-2670-2671-2672-2673-2674-2675-2676-2677-2678-2679-2680-2681-2682-2683-2684-2685-2686-2687-2688-2689-2690-2691-2692-2693-2694-2695-2696-2697-2698-2699-2700-2701-2702-2703-2704-2705-2706-2707-2708-2709-2710-2711-2712-2713-2714-2715-2716-2717-2718-2719-2720-2721-2722-2723-2724-2725-2726-2727-2728-2729-2730-2731-2732-2733-2734-2735-2736-2737-2738-2739-2740-2741-2742-2743-2744-2745-2746-2747-2748-2749-2750-2751-2752-2753-2754-2755-2756-2757-2758-2759-2760-2761-2762-2763-2764-2765-2766-2767-2768-2769-2770-2771-2772-2773-2774-2775-2776-2777-2778-2779-2780-2781-2782-2783-2784-2785-2786-2787-2788-2789-2790-2791-2792-2793-2794-2795-2796-2797-2798-2799-2800-2801-2802-2803-2804-2805-2806-2807-2808-2809-2810-2811-2812-2813-2814-2815-2816-2817-2818-2819-2820-2821-2822-2823-2824-2825-2826-2827-2828-2829-2830-2831-2832-2833-2834-2835

• ৩০। $2x^2 + 3x + 4$ এর x^2 এর সহগ 2 । $5x^2 + 7x + 9$ এর x^2 এর সহগ 5 । $10x^2 + 12x + 14$ এর x^2 এর সহগ 10 ।

• ડિગ્રીના છેલ્લા ભાગ, પણ સંતોષક અનુભવો નો સંચય થાય છે.

[illegible]

• ឆ្នាំក្រៅ ឆ្នាំឆ្នងប្រើស្រោច ទឹក = ពិធីឆ្នើមឆ្នងប្រើស្រោច ប្រើស្រោច ទឹក.

• Antzergmies d'ichmōn yiln d'ich $e_i = n$ th d'ich e_i , n'ich uim e_i .

• **အသံ** နှင့် **အသံ** တို့ကို ဖွဲ့စည်းပုံအားဖြင့် (အသံအားဖြင့် ဖွဲ့စည်းပုံအားဖြင့်) ဖွဲ့စည်းပုံအားဖြင့်

• બેચન કોલેજના ગ્રીડ પ્રમાણે જાન તથા 21/8/2020 ના જાન 22/22 ને બ.વિ.ભાગી
જઈ, બીજાવારમાં બેચન જાન.

• ମଂ ବାଧାରେ 2101 ଡ୍ରାଏର ଯନ୍ତ୍ର ଡିସାଇନ ଏ, ୧୫୫୫ ଗ୍ରାମର ଇଡିଆର, fusi, ଇଡିଆର, ନିଆର

[illegible]

• ૧૨/૧૨ ના રાત્રી ૨-૩ વાગ્યાના રીતે ૧૨૦૨ + ૨૦૨૧ નો ૨૧૦૨ ઇમારત બંધ થઈ - અધિકારીઓ ૨૧૦૨ નો - નવો રીફાઈ બંધી. રાત્રી ૨૦૨૧ ના રીફાઈ ૨૧૦૨ થી થઈ.

① ओही मिलाइये ।

1. गाथा १८	A. चारित्रमोह के नाश की विधि
2. गाथा ८०	B. दर्शनमोह के नाश की विधि
3. गाथा ८९	C. धृतिधृतिधृति रसैव मूढता का निराकरण
4. अन्धदर्शन	D. चोर (छा)।
5. प्रमाद	E. चिन्तामणि रत्न
6. इसके लक्षणों को प्राप्त करना	F. मुक्त होना, मोक्ष की प्राप्ति होना
7. आगृत रहना	G. शुरुचोपयोग में रहना ; शांतिप्रसाद परिणाम उत्पन्न करना

② 'अथ' या 'युक्त' मिलाइये ।

- 1- हम सब राजी हैं, इसलिये हमें सदा चारित्र है ।
- 2- पूज्य गुरुदेवजी, पूज्य ब्रह्मजी और पूज्य गोगामीजी को सदा चारित्र था ।
- 3- कुंदकुंदाचार्यदेव और सभलचंद्राचार्य देव को सदा चारित्र था ।
- 4- हम सब को जो प्रमाद है, उसी प्रमाद की बात इस गाथा में की गयी है ।
- 5- दीक्षोपशम समकाली को मिथ्यात्व और अनंतानुबन्ध के संपूर्ण नाश करने का पुरस्कार, द्वेष करना लगी है ।
- 6- महापुत्र, सज्जित, गुणिक परिणामरूप शुरुआत मुनिराज के लिये प्रमादरूप चोर है ।
- 7- पुन्यनर १२ और उत्तम परमात्म भगवान कुंदकुंदाचार्य के प्रमाद का प्रतिक है ।

(१) 'लघु' या 'मूठ' बनाई दें।

- 1- मोक्षमार्ग दो प्रकार का है - (अ) निश्चय मोक्षमार्ग या दृष्टेदरसनत्रय द्वारे (ब) व्यवहार मोक्षमार्ग या श्रेष्ठरसनत्रय।
- 2- लीटिकर भगवान् सर्वत्र द्वारे वीतराग होने के परम आलम् है, यद्यर्थ उपदेष्टा है।
- 3- कर्मक्षेत्र के प्रकार में कृतपना नहीं है।
- 4- पुण्य करने के दिग्म होना - इस मान्यता में व्यवृत्ता है।
- 5- हमारे शहर के सभी दैनिक कार्यों में का में अड़े इत्यादि के आयोजन करना है; इसलिये मैं सच्चा पुण्य हूँ।
- 6- यह गाथा ८० द्वारे ८१ गाथा के उपलब्ध की गाथा है।
- 7- भगवान् ने दिव्यदिव्य में जो कहा, इसके ज्ञान के ज्ञान के ज्ञान भगवती जानकारी है; इसलिये इसमें मोक्षमार्ग की प्राप्ति के आरे में दृश्य कुछ काकी रहता होगा।
- 8- लघु ज्ञान है, इसलिये मोक्षमार्ग भी ज्ञान ही होने चाहिये।
- 9- मोक्षमार्ग के आरे में हमें व्यवृत्ता रहती है - यह दिखाता है कि हमारी मति अब व्यवस्थित नहीं है।
- 10- आचार्यजी कहते हैं कि दैनिक प्रसापके अल हो - इसलिये हमें प्रपन्नकार का यह कर्मार्थ अर्प कर देना चाहिये।
- 11- मति व्यवस्थित होना देखिए मोक्षमार्ग के आरे में नियंत्रण होना।
- 12- यदि हम दृश्य, क्षेत्र, काल द्वारे आप अनुसार मोक्षमार्ग की व्याख्या नहीं बदलेंगे तो हमारा जैनधर्म 'OUT DATED' हो जायेगा।
- 13- उन्मैक होय जीन काल में परमात्मा का जंघ - इस गाथा का यह मुख्य दिव्य है।

- માટે મા-ભાષ, દીકરો-દીકરી જે બેદી પડેલાં છે તેમનાં માંડ કરીભાષ રૂપે રહેલું છે; બેદીનાં સંક્રાંતિ અનુકૂળ હોય તો મને દીકરો પડે પિતરો પુત્ર પડેલાંને પુત્રપુત્રીને સંભળનારે સંભળનારે અંતરમાં તે છે, તે જ છે.

• મેંજી, ભાડા, ટોટલાં, મરચાં અને બેદી જડના પચાઈ છે. એને ભવન અને જાન થાય છે એને માનમાં પડે પચાઈને ખોળાની પચાઈ માને છે.

- 'દેવર' બાદ્ય છે, 'દેવર' શબ્દ. એના સંક્રાંતિની ખાલી મચાઈ છે. પડેને બેદીમાં જાનવાની માનવામાં એ દેવરના થતો નથી. એના દેવર સંક્રાંતિને તે જોડે રાત છે. એના સંક્રાંતિ છે તેજી જાન તેજી છે.

- અંતરમાં અંતર પુરેશમાં જાળના એકાંત પુરેશ, તેમના એકાંત પુરેશ - એને બેદી અંતર જોડે છે રહેલું છે. તે ખોળામાં રહેલું છે, પડેજ દેવર સંક્રાંતિને તેની ખાળાના જે હિંમતી રહેલું થાય છે.

- 'બેદી' એને તેજીને હિંમતીને નિરંજન તેજી છે. એ નાચમાં છે જ નહિ. નાચે તેજી નાચે છે એને નાચે એકાંતને એજી તેજી એકાંત છે. એ જાળમાં નાચે માટે એ જ નહિ. નાચે માટે બેદી દેવર એકાંતે, એકાંત, એકાંત છે. તેને ખોળાના માનવાને તે બેદી તેજી દેવરમાં ભાળી જતાં નથી.

- સંક્રાંતિમાં ગાળા ૧૫ માં છે - નિરંજન તેજી ભાળા એને ભાળે નાચે દેવરના માળમાં નાચે નિરંજન થાય છે.

- દેવર - એ સારું એને એ સારું એજી માળ્યું.

• માંડીમાં પ્રાપ્તિ થઈ પાડું ૧૨૫! એ પ્રાપ્તિ તે માળ્યું છે એને બીજી વસ્તુએ માળ્યું છે - એ જે સારું-દેવર તેજી થાય છે.

- બેદીને બેદી રાંધે છે. નીકેલે એને જાળમાં જાય બેદી રાંધે છે, પડેજ તેમાં જાળમાં દીકરો-એકાંતના માળમાં પડે છે.

- પુત્ર એકાંતમાં ખાળીના એકાંત બેદીના એકાંતમાં પુત્રના એ નાચા થાય છે, તે જાળમાં એકાંત બેદીના પુત્રના એ નાચા - એકાંત, એ એકાંત - ખાળી થાય છે. બેદી દીકરો તે દીકરો છે, એકાંત દીકરો એકાંતે નાચે પડે છે, તેજી એકાંતે જાળમાં પુત્રના ખોળાના એકાંતના એ પુત્રના નાચે ખાળી છે છે.

- બેદીના ૨૩૨૨ જાળના પુત્રના તે એ નાચા - દીકરો એકાંત - ખાળી થાય છે.

- સારું એને જાળમાં એકાંત પડે એકાંતના એકાંત એકાંત છે. એકાંત એકાંત - પુત્રના એકાંત એકાંતે એ જુદા છે.

(१) जोड़ी मिलाइये।

1. निश्चात्प (दर्शन मोह)	A. दर्शन मोह के युक्त, निर्दिकार श्रुत्यात्मा के रहित, इष्टानिष्ठ इन्द्रियायुक्तों में हृषीयकांद होता।
2. रागा-द्वेष (चारित्र्य मोह)	B. द्रव्य-गुण-पर्यायों में विपरीत अविप्रतिपक्ष के कारण तत्त्व में लक्ष्य उत्पन्न करने वाला जीव का भ्रमभाव।
3. परिपंथा	C. यह अच्छा है और यह बुरा है इसी मान्यता।
4. लक्ष्यप्रतिपत्ति	D. शीला स्वरूप को छोड़ कर रागा-द्वेष में प्रवर्तना।
5. द्विधा विदारित	E. दो भागों में खंडित।
6. अहंत्व में हत का प्रवर्तन करना	F. तत्त्व की विपरीत लक्षण, वस्तु स्वरूप का अज्ञान।
7. हत	G. शत्रु, लुप्टेश

(२) संच या जोड़ बनाइये।

- 1- मोह का लक्षण लक्ष्य विषयक विपरीत मान्यता है।
- 2- मोह^{१०} लक्ष्यों को अराजक अग्रहण है, इसलिए मुझे मोह नहीं है।
- 3- मोह के तीन प्रकार हैं: निश्चात्प, रागा और द्वेष।
- 4- मुझे दर्शनार्थक संबंधित विपरीत राग है, इसलिए मुझे सच्चिदर्शन नहीं हो सकता है।
- 5- चारित्र्य मोह दर्शन मोह का कारण है।
- 6- दर्शन मोह चारित्र्य मोह का कारण है।
- 7- शत्रुत्व = अविचरता = चारित्र्य मोह = रागा-द्वेष।
- 8- श्री. हेमचंद्रजी हमारे आदरणीय पंडितजी हैं; उनके हमें बहुत लाभ होता है - इसका मानना हमारा मोह है।
- 9- मोह का स्वरूप और इसके भेद जानना इस गोदा का प्रयोजन है।

ફેબ્રુઆરી બેંચને પ્રાપ્ત થાય છે. તેને જ રીન આ એરાની કામ પામી એનિટર બાગાબાગ પહોંચેલા ફેબ્રુઆરી બેંચને પ્રાપ્ત થાય છે.

• નિર્ધારિત ફરી રાખવા છે કે જંગમી દીકરી જેમ જ આ કામ પામી એરાન (નિર્ધાર) છે, રાગા અને ફેબ્રુઆરી બેંચને પ્રાપ્ત થાય છે. કોઈ નિર્ધારિત એરાન, રાગા અને ફેબ્રુઆરી બેંચ હોય છે, બાગાબાગા છે, જંગમી નાચી તરુઓ છે.

• ત્રણ પુત્રોનો મોટો = નિર્ધાર, રાગા, ફેબ્રુઆરી. રાગા ગાનને દીપ શુભ કે અશુભ. કાંતોચન પહેલાં નાચા. કામનાજી દરેક તરુ ઠાંથાદરેનિ રાગ આરંગ તેના નેકો તરુ નથી.

• મોટો, રાગા, ફેબ્રુઆરી આ એનિટર તરુ તરુ છે, મોટો તેને ફેબ્રુઆરી. કોઈ! ફેબ્રુઆરી જ હોય છે. આ રીતે ફેબ્રુઆરી તરુ બાગાબાગ છે એવું પામી તરુ નથી. આ ને નિર્ધાર નાચી થાય એ રીતે ફેબ્રુઆરી થાય છે. નિર્ધાર = એક રીતે કાંતુ ૨ બ્રુઆરી ન થાય તેમ ગાય ભેર ભેરેન દાન થાય અને ગાયો મૂકેન થાય.

• બેંચ કાચીના મુજબ બેંચ કાચીના શિલ્પને તો છે એને ને પામી આમાં પડી ગાયો નાચે તો છે કે નિર્ધાર નાચી તરુ.

• બિચાઈ ગાય છે = તેના બાગાબાગ પ્રાપ્તિ, બાગાબાગ રાગ, બાગાબાગ કાચીના બિચાઈ ગાય છે.

• બાચી ભેર બાગાબાગ ફેબ્રુઆરી બેંચની બાચી પડે તેના પડે દાન પડે. તેના બાચીના એરાન દીપ નથી છે. તેમ કામ પામીના શુભ સ્વભાવને ન બાગાબાગ બાચી પહોંચેના પ્રેમને કાંતુઓ છે નથી છે. જાણને સ્વભાવ ને બાગાબાગ ફેબ્રુઆરી એકે કાંતુઓને નિર્ધાર-નિર્ધાર ફેબ્રુઆરી નાચે-પરતુ દુ તરુ રાત્રી ફેબ્રુઆરી નિર્ધાર નાચે

- ફેબ્રુઆરી તરુ છે એવાનું લખાઈમાં આવેલું. કે પરતુઓની નિર્ધારના બાચીમાં પડે છે

- ૧. આ બાચી છે તેના એરાનને લઈ દીપ તેમાં નથી છે એને પડેલ નાચે છે.
- ૨. દીપબાગના ફેબ્રુઆરી પ્રેમને રીતના દીપ પડેલ નાચે છે, તેમ આ નાચે ફેબ્રુઆરી, ફેબ્રુઆરી બેંચના પ્રેમને પડેલ નાચે છે.

૩. બિચાઈ દીપના બાચી ફેબ્રુઆરી ફેબ્રુઆરી બાચીમાં પડેલ દીપ પડેલ નાચે છે, તેમ પ્રાપ્તિના ફેબ્રુઆરી આ નાચે પડેલ નાચે છે. રાગાના રાગા, ફેબ્રુઆરી નાચે આને ને જંગમી પડેલ છે, પરતુ તેમાં ને ફેબ્રુઆરી તરુ છે.

• રાગાના બાગાબાગ મુજબ એને પ્રાપ્ત શું? શુભ અશુભ ભાવેન પરપહોંચેના એને પુત્રો મેંકી તો પામી પુત્ર મને ભાગ દરેક છે એવું મારગર નિર્ધારના બાચીમાં પડેલ છે.

• કે લગ્નના ગાયો લગ્નના એનિટર મેંકી નીતબાગી ગાયો છે. બાંધી નાચે ફેબ્રુઆરી છે, મોટો મેંકીએન મોટો-રાગા-ફેબ્રુઆરી એનિટરને તેના મૂકેન ફેબ્રુઆરી તરુ નાચે.

• દીપી રાગ છે, પુત્ર રાગ છે, બાગાબાગ છે; પરતુ તેને કોઈ એનિટરના બાગાબાગ કાચી ફેબ્રુઆરી નથી.

१) जोड़ी मिलाइये।

निर्धारित	प्रस्ताव
1- जात को निर्धाय (दरान) के अंदर होता है।	A. हिंदी प्रति प्रे के कारण गांधी में गिरकर अंधन को प्राप्त होता हुआ कामुक हाथ
2- जात को राग के अंदर होता है।	B. विरोध हाथ के साथ लड़ाई करने हुए अंधन को प्राप्त होता हुआ हाथ
3- जात को द्वेष के अंदर होता है।	C. गांधी के अन्याय होने के कारण इसमें गिर कर अंधन को प्राप्त होता हुआ हाथ
4- निर्धाय	E. अनुकूलता में इष्ट बुद्धि
5- राग	F. प्रतिकूलता में अनिष्ट बुद्धि
6- द्वेष	G. परद्रव्य प्रति लापतानी का भाव

२) 'मेच' या 'पूठ' बताइये।

- 1- एक प्रकार के अंधन का मूल निर्धाय - राग - द्वेष है।
- 2- इस ८४वीं गांधी में ८४ भारतीय राज्यों में क्रमशः होते परिश्रम को जारी करने का उपाय बताया गया है।
- 3- अस्तित्व के अंतर्गत के कारण हमारे जीवन की प्रति, जीवन का नया जीवन का चरण आच्छादित हो गये हैं।
- 4- दोष के दो प्रकार होते हैं - अनुकूल और प्रतिकूल।
- 5- निर्धाय (दरान), राग और द्वेष इन तीनों को 'मेच' नामक सामूहिक मंत्र है और इनके निर्धाय को या 'मेच' कहा जाता है।

1248

- [illegible]

(१) ओम्दी निम्नादि।

मोह का प्रकार	मोह की पहचान का चिह्न
1- दंष्ट्रिमोह (निश्चाय)	A. अनिष्ट विषयों में आपत्ति
2- राग	B. इष्ट विषयों में आसक्ति/प्राप्ति
3- द्वेष	C. पदार्थों की अवधारणा प्रतिपत्ति और प्रेक्षायोग्य निश्चय-मनुष्यों में लम्बचयन करुणाभाव
4- अज्ञानी की करुणाभाव (दंष्ट्रिमोह का चिह्न)	D. मिथ्यात्व रहित अपनी कमजोरी के दोषों के कारण होता करुणाभाव
5- ज्ञानी की करुणाभाव (चारित्र्यमोह का चिह्न)	E. मिथ्यात्व रहित परके कारण ऐक्यपूर्वक होता करुणाभाव

(२) 'लघु' या 'गुरु' बताइए।

- 1- उत्पन्न होने ही नष्ट कर देना = उत्पन्न होने ही न देना।
- 2- अज्ञानी की करुणा पदार्थों की अवधारण समझ सहित होती है।
- 3- अज्ञानी की करुणा पर पदार्थों के कर्तृत्व, ऐक्य, ममत्व के अहंकार सहित लम्बचयनपूर्वक होती है।
- 4- अज्ञानी की करुणा का मूल कारण मिथ्यात्वभाव है।
- 5- ज्ञानी की करुणा पदार्थों की अवधारण समझ सहित होती है।
- 6- ज्ञानी की करुणा पदार्थों से अलम्बचयनपूर्वक होती है।
- 7- ज्ञानी की करुणा चारित्र्यदोषों का परिणाम है।
- 8- अंगुष्ठों मिथ्यात्व से लम्बचयन का प्रमाण है।
- 9- अज्ञानी की करुणा पर पदार्थों के संयोग पर आधारित होती है।
- 10- यह जीव अपने शान्तिभाव को भूल गया है, अतः दुःख हो रहा है - ज्ञानी की करुणा इस राग पर आधारित होती है।
- 11- अनन्ता जीव तीनो कालों में रहने वाले हैं, इसलिये परके कारण जिसको करुणा माली है उसे अज्ञानी का अनन्तगुरु की राग कभी नष्ट नहीं होगा।
- 12- इस गाथा का अर्थ समझने के लिये सम्यक्कार का लघु अधिकार सम्पन्न होना आवश्यक है।
- 13- जीवनरागभाव ही लक्ष्य करुणा है।
- 14- भुक्ति, मृष्टा और योगादिके पीडित जीव को देखते हुए अज्ञानी, लम्बचयन दृष्टि प्राप्त कर और आपत्तिंगी भुक्ति के अलम्ब अलम्ब प्रकार की करुणा माली है। (15) अज्ञानी की पर प्रति करुणा के प्रकार की व्यापकता है।

① ओही लिखाइये ।

1. उपायान्त

A. अन्य उपाय

2. मोहोपचय

B. मिथ्यात्व का दूर

3. शब्द

C. शब्द का

4. अविर्भूत

D. प्रत्यक्ष प्रमाण के विरुद्ध न हो सका

5. लक्ष्य

E. साधने वाले के भावों को यथार्थ रूप से समझने

6. स्वयं ज्ञान

F. स्वयं ज्ञान

7. जिसने प्रथम भूमिका में गमन किया है

G. जिसने जानने की शुरुआत की है।

8. उद्भेद

H. स्फुरण; प्रगल्भा; फौजारा

② ज्ञानप्राप्ति के लिये आवश्यक विधिको यथाचित क्रम में बताइये।

A. परापर गुरुओं का उपदेश

B. आगम का ध्यान

C. स्वानुभव के प्रमाण / स्वसंवेदन प्रत्यक्ष

D. बुद्धि का अवलम्बन

③ लघु या लघु बताइये।

- 1- शिवभूति भुक्तिको शास्त्रों का ज्ञान कुछ भी नहीं है, किन्तु उन्हें ज्ञानप्राप्ति हो गयी है; इसलिये मुझे भी ज्ञानप्राप्ति के लिये शास्त्रों का अध्ययन करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
- 2- मोह के नाशका उपाय देखा शास्त्रों के गहरे अध्ययन की अपेक्षा रहता है।
- 3- पदार्थको प्रत्यक्ष प्रमाण के ही यथार्थ ज्ञान का संकलन है, परन्तु प्रमाण के नहीं।
- 4- सर्वज्ञ का यथार्थ निर्णय करना वह सर्वज्ञपद की प्राप्ति का पहला स्तंभ है।
- 5- आगम का अध्ययन आवश्यक पूर्वक करना चाहिये।
- 6- अद्वैत भावना के स्वयं-गुण-पदार्थ जानने के लिये आगम का अध्ययन आवश्यक नहीं है।
- 7- स्वाध्याय का अर्थ अपने ज्ञान अकेले में शास्त्र का जाँचन करना - इतना ही होता है।
- 8- प्रवचनसार का यह शिक्षणवर्ग भी स्वाध्याय का एक अंग है।
- 9- यह गाथा ८० वा गाथा की प्रेरक (Supplementary) है।
- 10- ज्ञानत्वज्ञाननिवेश = यथार्थ अस्तुत्तररूप से विपरीत अभिप्राय।

ઉત્કલિપ્ત - હવે જિનેદુદ્દાના શબ્દભૂષણમાં બેધારીના વ્યવસ્થા (- પદાર્થોના સ્થિતિ) તથા રીત
એ ને બિચારે છે -

ગાદી :

ફળા, ગુણો ને પદાર્થો ના 'અર્થ' સંજ્ઞાક તથા;
ગુણ-પદાર્થોનાં કારણનાં હેતુ જિને-પ્રિદેશમાં. ૯૭.

અનુવર્ત - ફળા, ગુણો અને તેના પદાર્થો 'અર્થ'નામક તથા છે. તેમાં, ગુણ-
પદાર્થોનાં કારણનાં ફળા છે (અર્થાત્ ગુણો અને પદાર્થોનું સ્વરૂપ - ભવ્ય ફળા ને છે,
તેમાં ભક્ષિત વસ્તુ નથી) અને (જિનેદુદ્દા) પ્રિદેશ છે.

ભાષા - ૯૭ માં ગાદીમાં તથા ૯૭ માં જિનેશાસ્ત્રોમાં સમ્યક્ બેધારીનાં મોદદાયનો ઉપયોગ
છે. અર્થ ને જિનેશાસ્ત્રોમાં પદાર્થોનાં શી રીતે વ્યવસ્થા ફરી છે તે સંજ્ઞામાં દર્શાવ્યું
છે. જિનેદુદ્દાને તથા છે તે - અર્થો (પદાર્થો) અર્થાત્ ફળા, ગુણો અને પદાર્થો. એ બિચાર
બિચારમાં બાજુ તરફ નથી. બાજુ એ ત્રણમાં, ગુણો અને પદાર્થોનાં કારણનાં (-તેમનું
સ્વરૂપ) ફળા ને છે. આમ દીપાદિ સેષ ફળાના ગુણો અને પદાર્થો અર્થ ફળાના ગુણો
અને પદાર્થોને અર્થો પણ થી નથી, એક ફળાને બોલબોલના ગુણ-પદાર્થોમાં રહે છે -
આવા પદાર્થોના સ્થિતિ મોદદાયના વિવિધાત્મક પદિત જિનેશાસ્ત્રોમાં ફરી છે.

પ્રાદરિપ(પ્રાદર)જેમ સુવર્ણ પાળાશ વગરેને અને ફૂલ વગરેને માને છે અર્થાત્ સુવર્ણ
પાળાશ અને ફૂલ વડે પ્રમાય છે (= પાળાશ અને ફૂલ સુવર્ણને માને છે) તેમ સુવર્ણ અર્થ
છે, તેમ ફળા 'અર્થ' છે; (૨) જેમ પાળાશ અધારાત્મક સુવર્ણને માને છે અર્થાત્ અધાર.
તેમ સુવર્ણ વડે પ્રમાય છે (= અધારાત્મક સુવર્ણ પાળાશને માને છે) તેમ પાળાશ વગરે
'અર્થ' છે, તેમ ગુણો 'અર્થ' છે; (૩) જેમ ફૂલ સુવર્ણને પ્રપરિભાષક માને છે અર્થાત્
સુવર્ણ વડે પ્રપરિભાષક પ્રમાય છે (= સુવર્ણ ફૂલને પ્રપરિભાષક માને છે) તેમ
ફૂલ વગરે 'અર્થ' છે, તેમ પદાર્થો 'અર્થ' છે.

ગાદી - • અર્થો ત્રણ અર્થ ને ગાદીમાં ફળા-ગુણ-પદાર્થનું સ્વરૂપ બોલ્યું છે; આગળ રોચ-
ભવ્યકામન મોદદાયનાં નામો બિચાર પડે બિચારનાં પ્રમાય ગામરો.

• અર્થ ફળા, ગુણ અને પદાર્થ ત્રણેયને 'અર્થ' તથા છે. ફળાને ગુણ-પદાર્થાત્; અને
ગુણો નથી પદાર્થોને ફળાત્ તથા છે, અર્થાત્, અર્થનાં તથા છે.

• ફળા, ગુણ અને પદાર્થ - આ ત્રણેયને અર્થ તથામાં આપે છે. ગુણો નથી પદાર્થો ફળાને
પ્રાપ્ત થાય છે અને ફળા ગુણો નથી પદાર્થોને પ્રાપ્ત થાય છે. આ રીતે ત્રણેયનું નામ
'અર્થ' બરાબર છે. જેમ કોનું પોતાના ગુણો (પાળાશ અર્થ) અને પદાર્થો (ફૂલ અર્થ)માં
સમાવે છે, તેમ કોણે ભેદભેદ પોતાના કારણમાં પણ ભાગ્ય પડે છે.

• અર્થ જિનેદુદ્દાના સ્થિતિમાં રાષ્ટ્રી રીતે બેધારીનાં ફળા મોદદાય; તેમાં મોદદાય મોદ
મૂલક ગાદી પાળાશ અને સુવર્ણનાં પ્રમાય પ્રગટ થશે.

• ભગવાન જેવા પદાર્થો મોદા છે, તેમાં જ તેમની વાણીમાં આપ્યા છે. તેમ બેધારીનાં સ્થાન
સંજ્ઞા તરે ભો મોદ દૂર પદા વિના રહેશે નથી.

• ફળા-ગુણ-પદાર્થ ત્રણેયમાં ભાષાત્મક ફળા અને પાળા ત્રણેયને અર્થ અર્થ અર્થ નામક
જ તથામાં આપે છે. ફળા અર્થાત્ રાષ્ટ્રનાં પ્રમાય, ગુણ અર્થાત્ રાષ્ટ્રનાં, પદાર્થ અર્થાત્
અર્થ - આ ત્રણમાં વાચ્ય અને વાચ્યનો ભેદ છે; પરંતુ ત્રણેયનું સ્વરૂપ અર્થાત્ ભગવાન
એ અર્થ નામ વિધામાં આપે ભો = ભો વાચ્યમાં ભેદ રાષ્ટ્રનાં ને આપે ભો = ત્રણેયને
અર્થ તથા છે.

(१) ओही लिखिए ।

1. अनिष्ट	A. वाचक, नाम, उपनाम, अहं, शब्दकोष
2. अनिष्टान	B. वाच्य, कहनेवाला, अर्थार्थ, कोलनेका विषय
3. अर्थ	C. जो जाने-प्राप्त करे - पहुंचे वह अर्थवा जिसे पचाय - प्राप्त कराये - पहुंचाये वह ; द्रव्य - गुण - पदार्थ
4. द्रव्य	D. शक्ति
5. गुण	E. अवस्था
6. पदार्थ	F. शक्तिवान् वस्तु

(२) 'सच' या 'जुठ' बताइये ।

- 1- द्रव्य - गुण - पदार्थ में आवभेद है ।
- 2- द्रव्य - गुण - पदार्थ में प्रवेशभेद है ।
- 3- द्रव्य - गुण - पदार्थ तीनों अर्थ हैं ।
- 4- अनिष्ट इष्टन के दोकार को प्राप्त करती है ।
- 5- द्रव्य को गुण - पदार्थत्मक और गुण तथा पदार्थ को द्रव्यात्मक कहा जाता है ।
- 6- जैसे द्रव्य गुणों तथा पदार्थों को प्राप्त करता है, जैसे गुणों पदार्थों को प्राप्त करते हैं और पदार्थों गुणों को प्राप्त करती हैं ।
- 7- द्रव्य - गुण - पदार्थ में वाचक - वाच्य का भेद है ।
- 8- मैं मेरी इच्छा के अनुसार मेरे शरीर को धूलका या मोटा कर सकता हूँ ।
- 9- मूल गाथा में पाठ है कि "गुण और पदार्थों का 'आत्मा' द्रव्य है" । यहाँ 'आत्मा' शब्द का अर्थ 'स्वरूप', 'वस्तु' या 'वस्तु' होता है ।
- 10- 'जैसे तद्गुण लब्धये' इस मंगलाचरण के प्रसंग में 'तदर्थ' शब्द का अर्थ यहाँ 'गुण' ही होता है ।
- 11- अनिष्टन के द्रव्य - गुण - पदार्थ उनमें ही हैं - ऐसा जान कर इनका लक्ष्य छोड़ कर स्वल्प करना चाहिये ।
- 12- 'आत्मा प्रसन्न भी नहीं है' और 'अप्रसन्न भी नहीं है' ; इसलिये आत्मा कभी विकारी पदार्थों को प्राप्त करता ही नहीं है ।

ઉપદેશ:- હવે, એ રીતે જોઈએ તો ઉપાયમય જિનદગીના ઉપદેશની પ્રાપ્તિ થાય છે. પણ પુરુષાર્થ કૌશલ્યનાથી એ તેમ પુરુષાર્થ તરે છે:-

ગાંધી:- જે માટે જિન-ઉપદેશ હોવાને રાગ-દ્વેષ-ભિન્નતા,

તે કમ માત્ર અંતઃપ્રાણને નિયંત્રિત કરવાનું છે. ૮૮

અનુવાદ:- જે જિનના ઉપદેશને પાળીને મોદ-રાગ-દ્વેષને છોડે, તે અંતઃપ્રાણને નિયંત્રિત કરી શકે છે.

ગાંધી:- એવા માણસે મૂળ અજ્ઞાન છે- નિષ્કામતા છે; તેણે જોઈને તરત જ જિનના ઉપદેશ તરફ વાટ જોઈ છે, જે નિષ્કામતા અને રાગ-દ્વેષને મૂળ જ નાથો (ગરબ તરીકે)- કાઢે છે.

• એ ઉપાયમય રીતે જાણીને મોદ પાળી પુનઃ કૌશલ્ય નાટી જાનવલમાંથી ચોંટાળીને તરત જ અંતઃપ્રાણને નિયંત્રિત કરી શકે છે. જિનજીવનનો ઉપદેશ મળી ગયો તો તે ઉપદેશ નિષ્કામ-રાગ-દ્વેષ ગરબ તરે- કાઢી નીકળી શકે છે.

• જેને હાથમાં તરત જ મળી રીય, પરંતુ તેને માત્ર રાગ મૂકે તો તે મોદ માત્ર મળી રીય નથી. તેના જ રીતે જિનજીવનનો ઉપદેશ મળે; પરંતુ જે રાગમય છે- કાઢી જવામાં તેણે રાગ રાગ નથી; જવામાં જાણવું છે, તેના કૌશલ્ય કાંઈકે દેખી, મોદ-રાગ-દ્વેષ ઉપર દૃઢ પ્રહાર તરે છે- એ જાણના ઉપદેશને મળે છે.

• જવામાં-જાણના નિષ્કામ અંતઃપ્રાણ પાળી જાણ-કૌશલ્ય મોદ પાળી માત્ર કમ ફળો મળી શકે છે.

• રાગમયના કૌશલ્યની રીતે રાગની રીતે (જવામાં) છૂટી જાય અને રીયના રીતે રાગ છૂટી જાય.

• જિનજીવનનો ઉપદેશમાં વિભાજન હોવાનું જાણી છે, તેને તે નીકળી શકે છે.

• જાણના લાભમાં નિષ્કામ અને રાગ-દ્વેષ હોવાનો ઉપદેશ જ કાઢે; કોઈકે જ જાણીને જાણના માધ્યમને જ ઉપદેશ કાઢે.

• જે નીચ પુરુષાર્થને કાંઈક જાણે છે તેના મોદ-રાગ-દ્વેષ હોવાનું જાણ છે- એ ઉપદેશ છે. ઉપદેશ જ કાઢે છે- જવામાં-જાણના, જાણના પ્રારંભ. એ ફળો મળી શકે છે.

• એક દૃષ્ટિ પ્રહાર = રીતે તે જાણ નથી. આરંભિક દૃષ્ટિને રીયના માધ્યમ પર દૃષ્ટિ રાગ અને દૃષ્ટિ પ્રહાર થાય છે.

• પચાસ જે કાળે છે તેને પણ હું તરે કાંઈ જાણ નથી- એ જાણ જાણના માધ્યમને જાણ છે.

• કોઈને જાણના જ જાણ છે. જાણના રીતે જાણના માધ્યમને જાણ નથી. એવામાં (ગાંધી ૮૯માં) તે કાળે જાણને મહાપ્રાણને પરિણામને રાગ છે, મોદ અને જવામાં-જાણના દૃષ્ટિમાં જાણના રીતે જાણ.

• મોદ દૃષ્ટિ દૃષ્ટિ પ્રહાર પ્રહાર કરીને તે મોદ જાણના માધ્યમમાં જાણ છે- એ જાણના માધ્યમ છે. જાણના મોદ-પુરુષાર્થ-જાણ છે. જાણ રીય રીય જાણ જાણના રીતે જાણ.

- સાર્વજનિક ગૃહ = રાષ્ટ્રીય, માનસિક આદિ બધાં ક્ષેત્ર, ભૌતિક પરિગ્રહ કંટાળે તે સાર્વજનિક ગૃહ થાય છે. 'આદિ કંઈક કંઈક રાખ્યાં રૂબરૂ, કંઈક હાથ, રાત કંઈક મરિય ના...'.

- 1) અન્ય બેબારે તરત નથી = હા, દાખાવેલો બેબારે તે જગ્યા તરત નથી.
- બેબારે હાથમાં હાથ કંઈ હજારે હજારે છે તે નો મિલ થાય નહિ, પરંતુ કંઈક કંટાળે પ્રકારે છે તે રાત્રી રજાંદા ક્ષેત્રના ગૃહ થાય. રાત્રીની મંદિરા તરત તરત બધે કંઈ નહિ પરંતુ તે કંટાળેલો બંધુ કંઈક રાત્રી - મિથ્યાતાનો તારાં તરીકાઓ કંઈક પરમાત્મા - પ્રતિષ્ઠામાં આવે છે.
- આશ્ચર્ય ખોળે ખોળાની બાત છે કે જે પુરુષાર્થનો અભ્યાસ તરત છે. અભ્યાસનો ક્ષેત્રનો છે, પરંતુ પરિભ્રમણ પ્રકારે તરત છે કંટાળે પુરુષાર્થનો અભ્યાસ તરત છે કંઈક તરત છે.

① जोड़ी मिलाइये।

- | | |
|-------------------|--------------------------------------|
| 1. अर्थक्रियाकारी | A. तुल्य ही, शाय ही |
| 2. क्षिप्रमेव | B. क्रिया, उद्योग |
| 3. व्यापार | C. प्रयोजनमूल क्रिया (मोक्ष) को करना |

② 'सच' या 'गूढ' बताइये।

1- मोक्षरूप के ^{मिथ} अज्ञान का उपदेश समझ कर पुरुषार्थ करना कार्यकारी है; बिना पुरुषार्थ सर्वद्वय से मुक्ति नहीं मिलेगी। मोक्षमात्र में पुरुषार्थ ही लक्ष कुछ है; इसलिये पदार्थों का परिणामन किय नहीं है।

2- अज्ञान का उपदेश लीला लालवार जैसा है। इसके प्रथम प्रहार से मोक्ष का सर्वथा नाश होता है; इसलिये इसमें हिंसा होती है।

3- शास्त्ररूप अज्ञान ह्यात्म में अनेकार्थ इतल दृष्टि करना ही अज्ञान ^{कथित} मोक्षरूप के उपदेशरूप लीला लालवार चलाने का अर्थ है।

4- अज्ञान का उपदेश लीला ह्यात्म (जीवो) है - कथित इसमें विश्वास को नाश करने का सामर्थ्य है।

5- अज्ञान का ह्यात्म दुर्लभ उपदेश मिलने के बाद हम लक्ष को इस गाथा के लालवार को समझ कर शाय ही पुरुषार्थ करना चाहिये।

ઉપરોક્ત:- હવે, સ્થા-પરના ભવિષ્યની (-નિદેશાવગની) નિશ્ચિત જ નોંધનો ફાય
 રાખ રાખ છે તેથી સ્થા-પરના ભવિષ્યની નિશ્ચિત માટે પ્રયત્ન +2 છે:-

71121:- જે શાસ્ત્રીય વિજ્ઞાનમાં, 42^મ બની વિદ્યાર્થી બા
 દિવસના 2^મ બાઈ માટે, ગોલ્ડન ફાય નં +2. ૯૮

કેન્સરના પાયા:- જો ગાંઠમાં પથ્થરો, ચીજો, પાણી અને હવાનો મિશ્ર મિશ્ર હોય તો તેને કોન્ક્રીટ કોન્ક્રીટ (-કોન્ક્રીટ) કહેવાય, તેને કોન્ક્રીટ કહેવાય.

Frage 1 : - Zeichnen die Zeichen dazu, wie man die Zeichen von links nach rechts liest.

Հիմա մտնենք ձեր աշխարհի $\rightarrow$ զգա՞նք y -ը t_2 և՛, y -ը t_2 և՛, թու՞նք t_2 և՛,

આનંદ પુણ્યભાગિ પૃથ્વીભાગે સ્વભાગે હોય જાણી જાણે જાણે છે, તેમજ જાણે જાણે જાણે.

તેનાથી ૩૦ 2024 નાના ભાગે છે, તે (એટલે) સગા જાણીતાઓનાં દાન ચાલતો મહેલો.
સાચી દે છે, જોનારો જાણીતા ભાગનાં સાચી ચાલતા છે.

• યોગ્યગણ 207-207 ગાદી, બીજા પુલક 282-4 ફાળો છે.

• ધારણત લક્ષ્યવાળાં કાર્યો છે અને એવું લક્ષ્યવાળું લક્ષ્ય એવું બદલાય છે; આ રીતે સ્વ-પરોપકારી મહેનતોની સિદ્ધિ થાય છે અને આ જ મહેનતો જ મોહનો ક્ષય થઈ શકે છે; તેથી સ્વ-પરોપકારી મહેનતોની સિદ્ધિને મારે પ્રયત્ન + છે.

કિંમત	જાન સુધીની જરૂરિયાત અને અસરોનો નોંધ 2019-2020 ને આધારમાં છે; આ
ટીપ્સ	બેઝ યુદ્ધના મોડેલ અનુસાર કાયદાઓને બિન અર્થ સાચવે યાન થાય છે.

આથી જ પુણ્ય સર્વદુઃખોથી મુક્ત થવા માટે છે, તેથી જિનસંપ્રદાયના લોકો બ્રહ્મચર્ય, અશ્વમેધ, યજ્ઞ-પર્યગ્નિ, ભેદભિજ્ઞાન +27નો મોલ-સાધન-ક્રિયાઓના સાથે આત્મચતુર્વિધ પદો ભક્તિ, ભજન, આત્મચર્ય સંપાદન +27નો તેમાં જ સમાવેશ થાય છે.

• ૭^{મું} બાંધ = સંયુક્ત; ચાંચોચાન = જેનું છે તેનું; દુરમાન = પ્રિયતમ તેમજ બેટા
 છે; દુરમાન્ય - દુરમાન્ય છે, તેની જાણે સીંચણ સુધારવાનો સંબંધ છે.

આ મામલાને બે રાઈ ને રાઈ એ જ નહિ, પરંતુ રાઈ રાઈ બધા રાઈ નહિ. આ બાબતો ધ્રુવ દેવના રાઈ- ધ્રુવ બધા રાઈ જ રાઈ એ. બધા મામલાઓ ને બધા દેવના રાઈ એ. બે રાઈ ને બે રાઈ રાઈ રાઈ રાઈ રાઈ એ.

પર જાણે તો જોઈ પરજી પડાયે જાણે પણ જોઈને જોઈ-જોઈ પડાયે જાણાયે +2 છે.

1. સુપરના પિત્રાચારી નિહિતિ નાં પુત્રાન તં ઇ 'કોન ફામ્પ' ઇ ને નંદીનામી? - નંદીનામી
2. કોન નિપતિ તં ઇ ફે કો કોન નંદીનામીનાં કોન - કોન નંદીનામીનાં કોન - નંદીનામી
3. કોન કોન કોન કોન. કોન કોન કોન - કોન કોન - નંદીનામી તં ઇ.

• 2019 ལོའི་གསལ་པོའི་རྒྱུ་རྐྱེན་དང་ཕྲག་བཅས་ཀྱི་ཁྲིམས་ཤིང་གི་ཡིག་ཚུ་ལྟར།

[illegible][illegible]

7. Година и Ета.

[illegible]

① जोड़ी मिलानें।

1. स्वीय चेतनात्मक दृष्टांत	A. पुद्गलादि द्रव्यों का अचेतन द्रव्यपना और अन्य आत्माओं का चेतन द्रव्यपना
2. परकीय अधोचित दृष्टांत	B. इनपने आत्मा का चेतनस्वरूप द्रव्यपना
3. अधोचित	C. अवेदान, स्व-पर का विभाज
4. विवेक	D. अधोचोदय, जैसे है वैसे

② 'सच' या 'सुख' बताइए।

- 1- स्व-पर के अवेदान के बारे में मैंने अहोत पड़ा है, सूना है, मिथ्या है, अन्य को समझाया है; इसलिये मुझे स्व-पर का विवेक प्राप्त हो गया है।
- 2- स्व-पर का सच्चा अवेदान आत्मानुभूतिपूर्वक ही होता है।
- 3- इस गाथा में 'दृष्टांत' शब्दों में जैन विद्या प्रवेशिका में लिखे हुए द्रव्य के सामान्य गुण (जिन शक्ति के कारण के द्रव्य कभी टूटकर न रहे और जिसकी पर्यायें सदा अवलम्बी रहें) की बात की गयी है।
- 4- इस गाथा में 'दृष्टांत' का अर्थ 'द्रव्य-द्रव्यपना' होता है।
- 5- अवेदान का अर्थ स्व-पर को जुदा जानना - झूठा होता है।
- 6- अवेदान का अर्थ स्व और पर को जुदा जानकर स्व में केवल स्थापित करना - झूठा होता है।
- 7- द्रव्य द्रव्य को पर्याय के रूप में नहीं है - इसी निषेध द्रव्य करना है।
- 8- अचेतन परमाणु का दृष्टांत-द्रव्य है।
- 9- राग की पर्याय का व्यवहार होकर वह राग रूप में ही द्रव्य में मिल जाती है।
- 10- मोह का लय होना = मोह उत्पन्न ही न होना।

2181 :-

ଜିନିଷର ଶୃଙ୍ଖଳା ନାହିଁ କାରଣ ସେ-ସବୁ ଗୁଣି ଉଠି. ଫ.

• યાદા રહિત = રાંધેલ પિત્તા. ; રૂપરૂતના પિલ્લેને પાત્રો = રૂપરૂતના પિત્તાને રાંધેલ.

① ओरी निम्नांकित ।

1.	प्रवण	A. अभिमुख
2.	अन्तर्धारण गुण	B. भिन्न लक्षणयुक्त गुण जो किसी अन्य द्रव्य में न हो ।
3.	द्रव्यलक्षित	C. द्रव्य परंपरा ; द्रव्यसमूह
4.	सत्	D. अस्तित्वमय
5.	अहेतुक	E. अकारण ; जिसका कोई कारण न हो ।
6.	स्वयं सिद्ध	F. जो सत् और अहेतुक हो ।
7.	लक्षण	G. लक्षण ; निरूपण
8.	योग रहित	H. संबंध रहित
9.	ध्रुव धारण	I. निकाल लक्ष्य, नित्य
10.	पंडित	K. राजा और पदाधिकारी मिलकर चिन्तायुक्त
		वृद्धिवाला बुद्धिमान

② मेरे अतिरिक्त अन्य दार्शनिकों सहित यह प्रकार के अज्ञान द्रव्य के साथ मुझे निम्नलिखित लक्षणों में से किस प्रकार का संबंध है ?

- A. स्व-स्वामी संबंध ; C. आधार-आधेय संबंध
B. कर्ता-कर्म संबंध ; D. NONE OF THE ABOVE

③ 'सच या अर्थ' बताइए ।

- 1- परम पुष्कल और स्वतः अस्तित्व जानकर स्वयन्मुख होकर स्वयं अपने अस्तित्व स्थापित करना वही मोक्षमार्ग है ।
- 2- इस अज्ञानरूप कर्म में यह प्रकार के अज्ञान द्रव्य अकेले जाग्रत रूप में रहते हैं, फिर भी मेरा स्वयं अस्तित्व मुझे परम पुष्कल रूप में जान होता है ।
- 3- स्व-परम के आवधारण रूप विशेष बिना अभ्यवर्ति होता नहीं है ।
- 4- मैंने जयपुर में शास्त्री और जैन दर्शनार्थ की डींगी प्राप्त की है, इसलिये मैं इस गाथा में कथित 'पंडित' हूँ ।
- 5- किंवावती शास्त्र मेरा अन्तर्धारण और भिन्न लक्षणयुक्त गुण है ।
- 6- 'ध्रुव धारण करना हुआ द्रव्य वह है' - यह भी भेद का कथन है ।
- 7- आगम का ज्ञान अर्थात् स्वयंवेदन ।
- 8- पंच परमेश्वर मेरे से भिन्न हैं, मैं उनको पर जानता हूँ, इसलिये उनके साथ मेरा कोई संबंध नहीं है - इसी भावना पंच परमेश्वर का अविनय और अज्ञानता है ।

[illegible]

51181-1

2. ਮਾਨਵਰੀ ਹੋਣਾ ਮਨੁੱਖੀ ਖੋਲ੍ਹੇ ਦੇ ਇੱਕ ਗੁਣ

ଶ୍ରୀକା ବିପ୍ଳବ, ୧୫ ଅଗଷ୍ଟ ୧୯୮୧; ଗଞ୍ଜାମ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ଚାରି. (୨).

[illegible]

1. ନିୟମ:- ଯେ କେଉଁ ଡକ୍ଟରମାନଙ୍କୁ ସାମାଜିକ ହିସାବ ଧରି ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ସେହି ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି।
 2. ନିୟମ:- ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ଯଦି ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ତେବେ ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି।
 3. ନିୟମ:- ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ଯଦି ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ତେବେ ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି।
 4. ନିୟମ:- ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ଯଦି ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ତେବେ ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି।
 5. ନିୟମ:- ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ଯଦି ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି, ତେବେ ଡାକ୍ତରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଅନୁମତି ଦିଆଯାଇଛି।

(9) જો ભાગ્યશીલ પ્રાણી +2 થી 7 સમાધિ નોખી/બાંધી પ્રાણી થાય તો 200 (બેસદ)

241. ગાંધીજી પ્રાંતી +277(2) સારી સમજણ દર્શાવે. જો દર્શક 0 ને જાણે છે તો (11122222)

42220 fady fu dinn (bimann zillhni) 271220g Einzahlung auf f21n, 500 € f1n & 10000

પરિપાત્ર છે ને માત્ર નિ-મત છે કાન (નિવંધક) તેથી છે; નહીં ઘટપાત્રના ધર્મના ધર્મ

ମନୁଷ୍ୟ ଯେ (କାର୍ଯ୍ୟର ସାଧନା) ଯେ କାର୍ଯ୍ୟର ପରିଣତ ଫଳକୁ ଯାହା ଫଳ, ସେ ଯେ ଯେ ଯେ

ଉ.	ନାହିଁ	ପିତା ପରିଚାଳନା କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ନୁହେଁ ଏବଂ ପୁଅ ଶିକ୍ଷାଦାନ କରୁଥିବା ଶାସ୍ତ୍ରୀଙ୍କୁ ନାହିଁ ।
----	-------	--

ក្រុមហ៊ុន ហាង ធុ ធីន (ឯករាជ្យខ្មែរឈ្មួញ) ក្រុមហ៊ុនក្រុមហ៊ុន ហាងកញ្ចក់ ខ្សែប៊ែរឈ្មួញ

કાર્બોન ડાયોક્સાઇડ, ધિરાણ પુનર્મિલન પ્રક્રિયાને કારણે (દેવ ગિરિયા), પુનર્મિલન નું

ଅନୁସନ୍ଧାନ ପ୍ରକଳ୍ପର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ଓ ଲକ୍ଷ୍ୟ ସ୍ପଷ୍ଟ କରିବା ପାଇଁ ଏହି ଗ୍ରନ୍ଥଟି ଲେଖାଯାଇଛି। ଏହା ଗୋଟିଏ ଗବେଷଣା ପ୍ରକଳ୍ପର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ଓ ଲକ୍ଷ୍ୟ ସ୍ପଷ୍ଟ କରିବା ପାଇଁ ଲେଖାଯାଇଛି।

အကယ်၍ γ_1 နှင့် γ_2 သည် $\gamma_1 + \gamma_2$ ဖြစ်ပါက၊ $(-d_{\text{max}}(\gamma_1, \gamma_2))$ သို့မဟုတ်

[illegible]

ਪਿਤਰਪਤੀ ਧਰਮ ਨਿਯਮ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਾਣੀ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ, ਜਾਂ ਮੈ-

ପାଳନ-1 ପ୍ରାଥମିକ ପ୍ରଶ୍ନ ଶିକ୍ଷା ଏ ଶିକ୍ଷା ଶିକ୍ଷା ଧର୍ମ, (ଶିକ୍ଷାପ୍ରାଥମିକ) ଓ ଶିକ୍ଷା ଶିକ୍ଷା।

End of my first term (- thank you very much and)

[illegible]

ה'תשנ"ח י"ב כ"ב חשוון תשנ"ח. ה' י"ב כ"ב חשוון תשנ"ח. ה' י"ב כ"ב חשוון תשנ"ח.

ଅନୁସନ୍ଧାନର ଉପସ୍ଥାପନା ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠାପନା ପାଇଁ ଉପଯୋଗୀ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ରହିଛି।

[illegible]

પ્રશ્ન. હાલના પાનના પુર્ણાન કોગ્રુમયરૂપે દાખલ થાના થતા જ નહીં - સત્તેજ સ્થાપના પામી શકે ?

[illegible][illegible]

Ես հիշում եմ, որ այն ժամանակ երբ շատ երիտասարդ էի, որ երբեք չէի հասկանում, որ

12+ 24034 7/10/2019 2019-2020 2019-2020

8. Գնահատե՛ք ձեր գիշերը: Բնական ճանաչողական ծրագրի ցանկացած փուլում, որ ձեր(եր) ցանկացած փուլում

ଦତ୍ତ ନନ୍ଦ; ତାଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀମାନଙ୍କ ସହ-ନିବେଶନ ସହିତ ନନ୍ଦ, ୩ ପୁଅ(ମ)-ଶେଷ(ବଡ଼) ପୁଅ- ଗାନ୍ଧୀ

પરીષદ, પંચમહાધન કોઈ ક્રિયા સંબંધિત +૫૨ હોય, તેમ છતાં તેને પરાશ્રય ફેરિ હોવાથી કાંઈમાત્ર પણ બીજાગણનાયુષ્ય દર્શાવતો જ નથી.

(નિમ્ન)

- સત્તા સંયુક્ત = કલિતલવાળા; કલિપિત = વિશેષ કરિત; નિયમવાળા, ભેદવાળા, નિમ્ન
- સ્વ-પરના અવરોધકપૂર્વક = સ્વ-પરના વિભાગપૂર્વક, - વિલંબપૂર્વક; સ્વ-પરને જુદા પાડીને.
- દર્શન = કાંઈકનો ભાવ; ભવ્યપરના = ભવિષ્ય (નિર્ભયતા, વિશ્વ) સંબંધ.
- ભવ્યપિત = અગુભ્ય, પ્રાપ્ત.
- કલિતલ એ પ્રમાણે છે: જાહેશ્ય-કલિતલ અને સ્વરૂપ કલિતલ. જાહેશ્ય-કલિતલની અંતરે અંતરે દુષ્ટતામાં સમાવવાનું છે અને સ્વરૂપ-કલિતલની અંતરે અંતરે દુષ્ટતામાં વિશેષપણું છે.
- અર્થજ્ઞ પ્રકાર = જાણનારના નિમ્ન છે, કાચાવાદી નિમ્ન છે; તે વગર સાચું મુનિપણું આપણું
- જાણ કલિતલની કોઈ એક બે ગણના છે. જ્યારે બાકી સર્વ કલિતલ-સમચાલનારો જાણ કલિતલ નથી.
- સ્વ-પરને અવરોધકપૂર્વક ગણનારો = પરપર્યાયનું, પરની પર્યાયનું જે પ્રકારે તે દુષ્ટતાને ગણનારો = સ્વ-પરને નિમ્ન ગણી ગણી ગણનારો. આમ ગણનારો નથી અને કાંઈ પ્રકારનો નથી તેને સમચાલનારો નથી.
- 'એ' એ જાણે બધા દુષ્ટતા સમાવે છે (-તે જાહેશ્ય-કલિતલ છે). બીજાનું સ્વરૂપ-કલિતલ લેવાનું નિમ્ન છે; તેમાં તેના જાણનાર છે - તેમ તે ગણનારો નથી.
- અમાનનારો દુષ્ટતા છે = અંતરે દુષ્ટતા પ્રમાણ છે, પરંતુ તેને કોઈ જાણ-કાંઈકનું બેદન નથી, તે જાણનાર જાણ નથી. 'સામાન્ય સંચાર આપણી... દુષ્ટતા આજના પદના ભાગમાં હોય...'
- ૭૫-૮૦ વર્ષ પહેલાં અમારા ગામમાં જોની સ્ત્રીલાલ પાનાચંદ હતા. તેને બાંહેડો આપનારો નિમ્ન હતા - સ્વામીના નજરે એવેલી દુષ્ટતાવાળી વાત. તેને સારીર અને જાણનાર કલિતલ દુષ્ટતા છે, અર્થજ્ઞતા - બાળના ભાવ - (નિમ્ન) બેદનના પરના જેવા છે, જુલમભાવ - દયાનાર - વિભાવના પરના જેવા છે અને જુલમભાવ જોનારના પરના જેવા છે.
- પ્રમાણભાવ = જેને કાંઈક અને સારાની નિમ્નતાની પાછર નથી.
- વિદ્યાર્થી, નિર્ભયવાળો અને જેને કાંઈ જાણ જાણ દિલીમાં મળે. બીજું નિમ્ન જાણનાર. એમાં કોઈ પ્રકાર પાછરે. પ્રકારનાર એને ગણે પરંતુ આપણાં જાણ પ્રમાણ પરિભાવ - એને અગુભ્યને કાંઈકને અગુભ્ય દર્શાવે તે સમચાલનારો છે.
- પરીષદ મહાન જે માટે જાણ્યું એને નથી. પરીષદ મહાન જેનાં જેનાં પ્રાપ્ત થશે એને નથી. મુનિને નિમ્નસંસ્કારનાર સર્વે પરાશ્રયાધિ - હોય.
- વિલંબ સ્વરૂપે અગુભ્ય અર્થરતો હોય!
- 'મુલાસા'માં કુદરતીવાદ જે છે તે અર્થરે! જાણ દુષ્ટતાને પણ દુષ્ટતાવાળું ન હોય! પ્રિયંતરના કાલેકો જે હોય આપણે જુલંબે? એને જાણ-નિર્ભયનાં જાણ, પરંતુ હવે આપણે કોઈ કોઈ પ્રમાણ અર્થર નથી.
- કોઈ જાણનાર કાંઈક થયું. હવે જાણ કલિતલની સમાવિષ્ટ જે છે.

① जोड़ी मिलाइये।

1. सत्ता के युक्त	A. अस्तित्व रहित
2. धर्मशास्त्र	B. आनंद का भाव
3. अक्षयपूर्वक	C. विभाग पूर्वक; विवेक पूर्वक
4. निरुपराग	D. उपराग (-मिलनता, विचार) रहित
5. उपलब्धि	E. प्राप्ति; अनुभव
6. सादृश्य-अस्तित्व	F. सर्व दृष्टों के अस्तित्व की समानता
7. स्वरूप-अस्तित्व	G. प्रत्येक दृष्टि का विशेष अस्तित्व
8. दार्शनिक अर्थान	H. प्रत्येक लक्ष्य की निष्पत्ति का अर्थान
9. प्रणामाभास	J. दृष्टान्तिंगी मुक्ति

② 'सत्य' या 'जुद्ध' बताइये।

- 1- सत्य-पर के विवेक रहित दृष्टान्तिंगी मुक्तिको भले ही लक्ष्यों का यथार्थ अर्थान न हो, किंतु अर्थान में कदाचित् लक्ष्य कभी प्रतापि के भासन के कारण वह हमारे लो अर्थान ही है।
- 2- दृष्टान्तिंगी मुक्तिकी लीका (-आलोचना, निंदा) करने से हमें लाभ है।
- 3- जिसे प्रत्येक लक्ष्य की प्रत्येक-प्रत्येक लक्ष्य का लीकार नहीं है, उसकी प्रतिक्रिया अर्थान से रहित होती है।
- 4- निरक्षय अर्थान पूर्वक परमेश्वर आदिक लक्ष्य मुक्तिको लक्षण है।
- 5- हमारा लक्ष्य सादृश्य-अस्तित्व समान है, स्वरूप-अस्तित्व निर-अर्थान है।
- 6- जिसे सत्य-पर का विवेक नहीं है, उसे परम अर्थान लक्ष्य होती ही है।
- 7- परीक्षा अर्थान करना लक्ष्य करने का लक्षण है।
- 8- प्रतापिका निरतिचार भासन करने वाले दृष्टान्तिंगी मुक्तिको देखकर हमें आभासिक प्रतिक्रिया के ध्यान में रखकर प्रणाम-लक्ष्य आदि करने चाहिए।

આગળ જણાવેલ સ્વ-પરિચય નો આગળના અંતર્ગત જાણ વડે વધારા જોડાયેલ છે.
આગળનાં એક સંદર્ભ છે કે ઉદ્યોગિક ક્ષેત્રે જોઈતી જરૂરિયાતો ઉપર પરાક્રમ રહિત અંતર્ગત
કાર્ય છે - આગળનાં જોઈતી જરૂરિયાતો સાંકડે જોઈતી થઈ જાય છે; આના ઉપર
આગળનાં જોઈતી વસ્તુકોનાં જોઈતી - જોઈતી સ્વભાવના કારણે જોઈતી -

गाथा - P2: प्रश्नोत्तर

① ओड़ी फिल्मों के।

- | | |
|--|---|
| 1. अहिर्भाव दृष्टि | A. राजा, निजिल और पद्यविमें कैवल्य बुद्धि |
| 2. आगम कौशल्य | B. आगम कथित आत्मस्वरूप में संवेदन शान का प्रयोग। |
| 3. रघुदेवदास मुद्रित
जैनसंस्कृत शिल्पकर्म | C. रघुदेवदास की महोदय काप वाला अनेकसुका प्रत्यक्ष |
| 4. धर्म | D. आचना |
| 5. मनोरथ | E. नीलराज चारित्र |

गाथा नंबर

लाक्षण्य

- | | |
|-----------------------|--|
| 6. पांच | B. मं लाक्षण्य को प्राप्त करता है जिससे निजिल की प्राप्ति होती है। |
| 7. लाक्षण्य | A. चारित्र्य वस्तुतः धर्म है, वह धर्म साम्यभाव रूप है। |
| 8. आरु | D. आत्म जिस समय जिस भावरूप से परिणमित होता है, उस समय इसी भावरूप होता है। अतः धर्मभाव से परिणत आत्म ही धर्म है। |
| 9. अज्ञात | C. शुद्धोपयोग रूप पद्य से परिणमित आत्म मुक्ति प्राप्त करते हैं।
शुद्धोपयोग रूप पद्य से परिणमित आत्म स्वर्गादिको प्राप्त करते हैं। |
| 10. गाथा नं. 9 में P2 | F. राजनस्य प्रहापन महाअधिकार |
| 11. गाथा नं. 9 से 92 | A. शुद्धपरिणाम अधिकार |
| 12. गाथा नं. 93 से 20 | B. शान अधिकार |
| 13. गाथा नं. 29 से 52 | C. शुद्धोपयोग अधिकार |
| 14. गाथा नं. 53 से 65 | D. मुख्य अधिकार |
| 15. गाथा नं. 66 से 82 | E. भूमिका |

② इस गाथा में 'श्रमण' का वर्णन किन तीन लक्षणों से किया गया है?

- A. पांच महाप्रल, पांच संनिति और तीन गुणों का धारक
B. आगम कौशल्य, मोहदृष्टि विनष्ट और नीलराज चारित्र में आरु
C. आगम में पाश्चात्, मंद कषारी और नान दिगंबर वेशादी

③ 'रघु' या 'रघु' अर्थात्।

- 1- आगम कौशल्य धर्म जीव को ही होता है।
2- धर्मपरिणत सत्त धर्म है।
3- स्वयंवेदन के बिना आगम कौशल्य हो सकता है।
4- आत्मोपलब्धि और शुद्धोपयोग से ही मुक्ति होती है।
5- इस गाथा में चारित्र के अ. भाग है।
6- इस गाथा में आचार्यों ने अपने अप्रतिहत ओड़णी शायक रूप श्रयोपशम समकित की बात की है।

- 7- पंचम द्वारा का मुनि दूसरे अर्थमें वैभक्तिक देव ही होता है।
- 8- इन जातिमें आचार्यश्रीने जो उत्कृष्ट काम की है, इनके लोभक में नहीं है।
- 9- इन जातिमें भिलाई हुई और दशा वाले मुनिराज मलका भी हो सकते हैं क्योंकि वक्ता और आचार्यक परिणाम दोनों उनके दूसरेके पूर्णतः स्वतंत्र ही है।
- 10- शिष्ट भूतन वाचक है और आत्मविज्ञान वाच्य है।
- 11- भिनवाणी शिष्टवाचक के बिना भी हो सकती है।
- 12- आत्मोपनिषद् का कार्य हम वह महिमेंमें कर सकते हैं।

